

## निराकारमां विगलन पामतो कला-आकार... | रघुश्याम शर्मा

‘सोनेरी चुंबन’ : लेखक : लाभशंकर ठाकर, प्रकाशक : २नाट प्रकाशन, गांधी रोड, अमदाबाद-३८०००१, २००८, पृ. २२४, डिम्त : ३. १४५/-]

कविश्री लाभशंकर ठाकरनी निबंधलेखनयात्रा १९८६मां ‘एक मिनिट’थी शुरू थઈने २००८मां ‘सोनेरी चुंबन’ सुधी पहोंची. त्रेवीस वरसमां पंदर जेटला संग्रही प्रसिद्ध थया. ‘एक मिनिट’नी १९८८मां बीज आवृत्ति पश्च थई.

‘सोनेरी चुंबन’ अभिधान लेखसंस्थय करता विशेष तो वार्ता के नवलकथानु लागजी. जेमने पुस्तक संस्नेह अर्पण कर्यु छे ते ‘सर्जक अश्विन महेताने’ ला. ठाकरे दस पत्रो लाभेला. पुस्तकना शीर्षक विशे प्रकरण ६मां एक पत्र छे जेमां श्री अश्विनभाईना एक झोटोग्राफनो संदर्भ आम छे :

‘अने हमशां ज पानाखरे वृक्षोने सोनेरी चुंबन कर्यु हुन्. आ क्षणमां स्व (आई)नु भान पश्च नथी. येतना मुक्त छे आ क्षणे, सर्व संचितिथी. आ नरी, डेवल सुंदरताना अनुभवनी क्षण छे. अमां वसंतथी विशेषी शिशिरनो कोई प्रतीकात्मक अर्थबोध नथी. अद्भुत सुंदर आप पंक्ति छे :

**‘and the fall had Just kissed the tress yellow.’**

‘अंतुचक छे. ‘छे’ ते ‘छे’ ऐने मात्र जोतु ते सत्य छे, तेथी सुंदर अने तेथी शिव छे. ज्यां एक छे त्यां त्रासो छे.’

अश्विन महेता छबीसर्जक साथे नोंधनीय गद्यसर्जक छे. केमेराना लेन्समां विविध अँगलथी पदार्थने, प्रकृतिने अने व्यक्तिने इम करी ते निश्च कलादण्डिथी वास्तवने गीली झप्पे छे. अमाना ‘हेपनिंग’ नामक झोटोग्राफ्स प्रदर्शनना अनुषंगे अंग्रेजामां ‘झोटोग्राफर्स डायरी’ मित्रभावे ला. ठा.ने वांचवा भोकली ऐना प्रतिसादमां आ पुस्तकमां १० पत्रो उपलब्ध छे.

छबी-डायरी जोई-वांची पत्रो पाठवनार पोते सर्जक कवि छे, एटलुं ज नहि, ‘बिर्ठिंग’ विशे अत्रतत्र चिंतनचंकमशामां लक्ष्याहु रुचि धरावे छे माटे तो छबीकारने लाखे छे : ‘आ तमारा beingना पर्याप्त समो उंडो, शांत येतोविस्तार छे. कलानुं रुप, कलानो आकार पश्च ऐना personal स्वरुपने त्यज्ञ दृष्टि निराकारमां विगलित थतो अनुभवाय छे, भावक येतनामां’ (पृ. २४)

सार्व साडेब ‘बिर्ठिंग ओउड नथिंगनेस’नो ग्रंथ आवेदे, विवेचक ओवियट ‘ओब्जेक्टिव कोरिलेटिव’नो मुद्दो उपसावे, गीताकार ‘अनासक्ति’नो महिमा करे – आपां तत्त्वदर्शनोमां आधेरे ‘बिन-अंगतता’नी कलास्थित भावमुदाघोष्य विवसती आवी छे. लाभशंकर, कलानो आकार निराकारमां विगलित थतो भावकमां नीरभे छे त्यां कुञ्जमूर्ति जेने ‘चोईसवेस अवेरनेस’ कहे छे ए अ-द्वैत तरफ्नो ठिशारो छे. सत्य सुंदर अने शिव रुपे ऐक्यमां उपस्थित छे, त्यां ज रस वहे छे.

‘सोनेरी चुंबन’ना उट (ओगाणचालीस) लेखोमां निबंधकारनी निसबत मुख्यते ‘रस’ अने ‘येतना’ तत्त्वने परिवक्षित करे छे. ठा.त. ‘शुद्ध कणा रहीनेय कणाकृति शोधक अने येतनाने उद्दीपित करती श्री सुमन शाहनी वार्ता’

(पृ. १८७), ‘रसरुप चैतन्य क्षिंचती येखोवनी प्र-भावक वार्ता योर’ (पृ. १२२), ‘श्री हरीश नागेचानी रससिद्ध ढूँढी वार्ता ‘जोला खातो माशस’ (पृ. १८०), ‘श्री रघुश्याम शर्मानी एक अपूर्व रससिद्ध वार्ता (पृ. १७६), ‘येतोविस्तारक सर्जक येखोवनी एक ढूँढी वार्ता’ (पृ. १३०), ‘कवि योगेश जोधीनी प्रभावक लाँगर पोअम : ‘जेसलमेर’, (पृ. ८०).

आवा बधा लेखोनी रचना अद्यतन विवेचननी परिभाषा, किटिकल जार्जने अंगत रसानुभूतिथी अलग राखी पोतानी कहेवाय अवी जाग्नुक भावकयेतनाथी निबंधकारे करी छे. हा, संस्कृत काव्यमीमांसामां प्रतिष्ठा पामेली परिभाषानो प्रसार अने भार घण्टा बधा लेखोमां योकाय पश्च दुर्भाग्यता के अविशद्ता भाज्ये ज जोवा मणे.

कवि न्हानालालनी कृति ‘विहंगराज तरस्या उडे रे’ना उड्यनसंगाथमां ‘ब. क. ठा.नी काव्यरचना शापुं तहने : एक नास्तिकनो शापोद्घार (पृ. ४२) वांचीअे त्यारे लेखकनी लेखिनी-संचेतना, माधुरी अने स्थान्शुवत् नास्तिकतानो पूरतो परिचय आपे छे !

बणवंतराय ठाकोरे सकण कलाव्यापारे ‘स-भान’ कव्यो ज हतो अे संदर्भमां लाभशंकर ठाकरनु अनुमोदक विधान छे :

“कोई पश्च कणा स-भान छे, कविता पश्च. आधेरे तो ते कणा छे. ते रचना छे. येतना भानरहित कही होती नथी. सर्जनी क्षाङोमांय येतना भानसहित होय. रचनाकार सर्जक, पूर्ण तन्मयता साथे, युगपद्म, बिनंगत भावदण्डिथी सर्जनमां सकिय होय, ते रचनाना अंश रुपे ज रचनानी बहार आवे” (पृ. ८८).

पूर्वसूरि ब. क. ठा. होय, कवि निरंजन भगत होय के सर्जक लाभशंकर ठाकर होय – आ सौ कणातत्वमां अनस्यूत स-भानताने पेखी-पोंगी शक्या छे पश्च अधुनातन विवेचनोमां गंभीर प्रयोगोने पश्च सभानताना कोठामां नाखी अवमूल्यांकन करवानी यांत्रिकता देखाय त्यां विवेक चूँडी जवाय. आवां उदाहरणोमां ‘सभानता’नी सामे ‘सहजता’ अति प्रतिष्ठा करवा जतां सभानतामां पश्च परोक्ष सहजता होवानो मुद्दो वीसराई जाय छे. वस्तुतः सहजतामां सभानता अने सभानतामां सहजता विशुद्ध कलामां अ-द्वैत स्वरुपे उपस्थित होय.

शुद्ध कणामां कोई प्रकारनी आभडहेया, अस्पृश्यता नथी. हिन्दीना सुविख्यात कथासर्जक प्रेमचंदज्ञनी वार्ता ‘पोखनी रात’ विशे लेखकनु वार्तिक मन-नीय छे :

‘शुद्ध कणा रहीनेय कणाकृति शोधक अने येतोविस्तारक बनी रहे’ (पृ. १६२).

ला. ठाकर, यागोरना ओछा संभावक नथी. अहीं रवीन्द्रनाथनी काव्यकृति ‘हुं शुं जाणुं, शुं जाणुं’नु रसदर्शन छे, ऐनी साथे कविवरनी जाइती वार्ता ‘पोर्ट मास्टर’नो आस्वाद-आवेद पश्च छे. (पृ. ५१, तथा पृ. १४७)

कविश्री रमाशीक सोमेश्वरनी काव्य-आकृति माटे लेखक आ समुचित रीते ‘साचर्य आनंद’ व्यक्त करे छे तो कविश्री योगेश जोधीनी लाँगर पोअम ‘जेसलमेर’नी प्रभावकता आ कथनमां व्यक्त करे छे : ‘काव्यमां क्यांय अ-य साथेनो संघर्ष नथी. रचनामां सार्वत लयात्मक प्रोजना प्र-भावक झंकारो छे... लाँगर पोअम छे, पश्च घनगात्र लाघव छे... कविनी – अनन्य काव्यरचना छे. (पृ. ८८).

सुंदरमूनु संस्मरण (पृ. ७०), रमाश्वलाल जोशी पासे सर्जको-पंडितोनी पत्रसंपदा अने यायरी माटेनी मांग (पृ. ११५), घनश्याम देसाईनी प्राय्यात वार्ता ‘गोकणज्ञो वेलो’ना आस्वाद

સાથે પ્રતિનિધિ વાર્તાઓ'ના સંચય વિશે રાવીશયામ શર્માને ૧૬ (સોળ) રસદર્શક પત્રો, સુમન શાહની 'લેટ્ટ્સ મિક્સ અપ'માં પ્રકટેલ મંથનચેતના (પૃ. ૧૮૮) જેવા નિબંધો સાથે 'ખેવના'ના તત્ત્વીને 'કેદ્ધિયત' રૂપે મોકલેવું અછાંદસ રચનાઓ વિશેનું ધ્યાનપાત્ર વાર્તિકા :

'હા, રચનાએ રચનાએ અછાંદસ કાવ્યના લયમાં અનન્યતા હોય. લાંગર પ્રોજ પોએમમાં તો ભાવાન્તરોના વળાંકો સાથે લયાન્તરનો શ્રવણીય સાક્ષાત્કાર થાય' (પૃ. ૧૦૦).

સુજ્ઞો પામી જાય કે અછાંદસ કાવ્યના લયમાં અનન્યતા હોય, એની જોળા 'શ્રવણીય' સાક્ષાત્કાર કેવળ લાંગર પ્રોજ પોએમમાં જ હોય એવું નથી. ગ્રલંબ છંદોબદ્ધ રચનામાં ભાવાન્તરોના વળાંક સાથે લયાન્તર આવે એ સ્વાભાવિક છે – એ જ રીતે લાંબી અછાંદસ રચનામાં પણ ભાવાન્તરો સાથે શ્રવણીય લયાન્તર ગુંથાઈ આવે ખરું.

'સોનેરી ચુંબન'ના રસનિર્દેશક પ્ર-વાસમાં એક સામાન્ય લાગતી વિગત નોંધપાત્ર તથ્ય રૂપે ઊભરી આવી. કવિની સંસ્કિદ્ધ રૂપ-ધ્યાયાની પાછળ દશથી વધુ નવલ-કથાઓના આલેખકની ભાવમુદ્રા કેમ હેંકાઈ જતી હોશે ?! સિલાસ પટેલિયા યા રઘુવીર ચૌધરી જેવા (ક્યારેક) આસ્વાદ કરાવે, અથવા નાનુભાઈ નાયક નવલકથાકાર ઠાકર પાસે 'કેદ્ધિયત' લખાવે; ત્યારે એમનાં ચરિત્રો વિશે લાભશંકર કથાસર્જનપરક અભિગમ આમ પ્રસ્તુત કરે :

'શીજનરેશન ઝંખતાં ચરિત્રોમાં માનવીય નવજીવનના અવતરણમાં મારો આનંદ છે. To see is to act. દર્શન વચનમાં અને ધબકતાં ચરિત્રોનાં કર્મ રૂપે જીવન રૂપે સાક્ષાત્ જોવું તે સર્જકની માનવીય આશા અને આનંદ છે.' (પૃ. ૧૨૧)

સર્જક અશ્વિન મહેતા 'કેમેરામાંથી 'સોનેરી ચુંબન' જુઓ છે, નવલકથાકાર-કવિ લાભશંકર રમ્ય કાવ્ય-નાટ્ય-નિબંધમાં સાક્ષાત્ જીવન આલેખે છે...